प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

शिक्षा से ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अतः विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए।
-डॉ. राधाकृष्णन

शिक्षाशास्त्री व पूर्व राष्ट्रपति

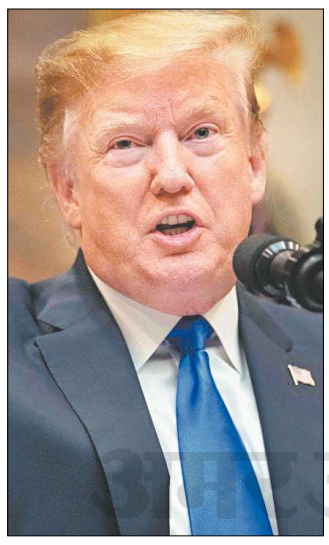

डोनाल्ड ट्रंप न केवल एक-एक कर पुरानी व्यवस्थाओं को एकतरफा ढंग से पलटते जा रहे हैं, बल्कि चीन के साथ व्यापार युद्ध में वह बेवजह ही भारत को परेशानी में डाल रहे हैं।

अमेरिका से झटका

बेशक डोनाल्ड ट्रंप ने इसकी सूचना पहले ही दे दी थी, इसके बावजूद भारत को अमेरिका से मिलने वाले जनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रिफरेंसेज (जीएसपी) यानी सामान्य तरजीही व्यवस्था का खत्म हो जाना भारत के लिए एक बड़ा झटका है। अभी अमेरिकी दबाव में ईरान से कच्चे तेल का आयात बंद हुए ज्यादा दिन नहीं हुए हैं कि ट्रंप की सनक का यह एक और उदाहरण है, जिसका हमारे कारोबार पर असर पड़ेगा। भारत इस तरजीही व्यापार का बड़ा लाभार्थी रहा है, और अमेरिका को किए जाने वाले कुल निर्यातों का 25 प्रतिशत हिस्सा शुल्क मुक्त उत्पादों का रहा है। सरसरी तौर पर यह हिस्सा बेशक बड़ा न लगता हो, लेकिन जिन उत्पादों को यह छूट मिलती रही है, उनके लिए इस नुकसान की भरपाई कर पाना कठिन है। ट्रंप ने यह फैसला अपने मेडिकल और डेयरी उद्योगों की शिकायत के बाद लिया है, जिसमें कहा गया था कि भारत उनके लिए अपने बाजार नहीं खोलता। अव्वल तो 1974 के जिस अमेरिकी कानून के तहत भारत समेत 120 विकासशील देशों को दो हजार से अधिक उत्पादों को अमेरिका में बिना शुल्क भेजने की सहूलियत दी गई थी, उसके कुछ तय मानक होने के बावजूद बदले में अमेरिका को लाभ पहुंचाने का कोई प्रावधान नहीं था। तिस पर ट्रंप शायद भूलते हैं कि हाल के वर्षों में कैलिफोर्निया के बादाम और वाशिंगटन के सेब जैसे अनेक उत्पादों के लिए भारत ने अपने बाजार खोले ही हैं। अब तरजीही व्यवस्था के लाभ के बदले में कोई देश अपने हितों से समझौता तो नहीं कर सकता। सिर्फ यही नहीं कि ट्रंप एक-एक कर तमाम समझौतों और व्यवस्थाओं को एकतरफा ढंग से खत्म कर रहे हैं, बल्कि ज्यादा क्षुब्ध करने वाला तथ्य यह है कि जिस भारत को अमेरिका उसकी लोकतांत्रिक ताकत और विराट बाजार के कारण चीन के समानांतर रखता है, वह अब चीन के साथ अपने व्यापार युद्ध में भारत को भी लपेट रहा है! हालांकि यह भी सच है कि हर्ले डेविडसन मोटरसाइकल पर भारत में लगने वाले ऊंचे शुल्क की तीखी आलोचना कर ट्रंप ने अपने इरादे की झलक पहले ही दिखा दी थी। जाहिर है, दोबारा सत्ता में लौटी केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के लिए यह एक बड़ी परीक्षा है, जिसने अमेरिका के साथ अपने सौहार्दपूर्ण रिश्ते को बरकरार रखते हुए इस समस्या का हल निकालने की उम्मीद जताई है।

जनसांख्यिकी में बदलाव के मायने

चौथे राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण के मुताबिक, देश में पहली बार बच्चों की आबादी कम और वृद्धों की ज्यादा हो गई है। यह चौंकाने वाला आंकड़ा सरकारी नीतियों में बदलाव की मांग करता है।

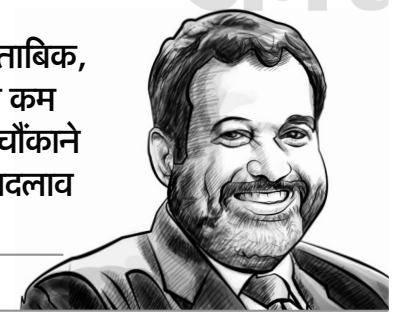

टी वी मोहनदास पई

चौथे राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-4), 2015-16 के आंकड़ों ने आधुनिक भारतीय जनसांख्यिकी में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत दिया है। इतिहास में पहली बार भारत की कुल प्रजनन दर घटकर (टीएफआर) 2.18 रह गई है, जो वैश्विक प्रतिस्थापन दर (2.30) से कम है।

विकसित देशों में, जहां उच्च स्वास्थ्य मानक के चलते बाल मृत्यु दर कम है, संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, प्रतिस्थापन दर 2.1 निर्धारित है। चूंकि एनएफएचएस-4 के लिए सर्वेक्षण वर्ष 2013-15 में किया गया था, हमने यह निर्धारित करने के लिए टीएफआर की प्रवृत्ति का अनुसरण किया कि मार्च 2019 तक भारत का टीएफआर लगभग 2.0 तक गिर गया होगा, जो विकसित देश की प्रतिस्थापन दर से और भी पीछे होगा। यह चौंकाने वाला है और आने वाले वर्षों में एनएफएचएस-5 द्वारा इसकी पुष्टि होनी चाहिए, जिसके लिए इन दिनों सर्वेक्षण चल रहे हैं।

बड़ी आबादी वाला भारत ऐसे देश के रूप में माना जाता रहा है, जिसे बड़ी जनसांख्यिकी का लाभ मिलेगा। पहले जैसे जनसंख्या वृद्धि चरम पर पहुंच चुकी थी, वैसे ही आज हमें यह जानने की जरूरत है कि हमारे युवाओं की जनसंख्या में आज गिरावट आ रही है। जनसंख्या वृद्धि का चरम दौर बीत चुका है। वर्तमान आबादी को बदलने के लिए भारत में पर्याप्त बच्चों का जन्म नहीं होने वाला। एनएफएचएस-4 के जनसंख्या पिरामिड को देखें, तो पता चलता है कि पिछले दस वर्षों में बहुत कम बच्चे जन्मे हैं। भारतीय इतिहास में पहली बार जनसंख्या पिरामिड उलट गया है। गिरावट की यह दर आने वाले वर्षों में और तेज होने की ही आशंका है। इसका मतलब यह नहीं कि देश की जनसंख्या तेजी से घटेगी, क्योंकि स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार से दीर्घायु में सुधार हुआ, जो कि 60 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों की बढ़ती आबादी से दिख रहा है।

पंद्रह वर्ष से कम उम्र के बच्चों का प्रतिशत एनएफएचएस-3 के 35 फीसदी से घटकर एनएफएचएस-4 में 29 फीसदी रह गया है। इसके विपरीत साठ वर्ष और उससे ज्यादा उम्र के लोगों की आबादी एनएफएचएस-3 के नौ फीसदी से बढ़कर एनएफएचएस-4 में 10 फीसदी तक पहुंच गई है। भारत अब बुजुर्ग लोगों का देश होने के कगार पर है, जहां हम अगले कुछ दशकों में देश की औसत आयु बढ़ने की उम्मीद कर सकते हैं।

यहां एक महत्वपूर्ण सवाल पैदा होता है कि क्या भारत समृद्ध होने से पहले ही बूढ़ा हो जाएगा। यह जनसांख्यिकीय बदलाव एक महत्वपूर्ण घटना है, जो आने वाले दशकों में राष्ट्रीय नीतियों को महत्वपूर्ण रूप से आकार देगी, जिससे सरकार को कुछ कठिन निर्णय लेने होंगे।

क्या देश का कामकाजी वर्ग लंबी उम्र के वरिष्ठ नागरिकों के बढ़ते वर्ग के भरण-पोषण के लायक पर्याप्त धन का अर्जन कर सकेगा, जो तेजी से पेंशन पर निर्भर रहेगा? चीन पिछले कुछ दशकों में अपने शानदार आर्थिक प्रदर्शन के कारण कुछ हद तक ऐसा करने में सक्षम था। हालांकि भारत की जनसंख्या में गिरावट उस तेजी से नहीं होगी, जिस तेजी से चीन में हुई। भारत को भी जनसंख्या नियंत्रण के लिए नीतियों से परे और तेज गति से धन बनाने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। कुछ उपाय हो सकते हैं, जिसे सरकार को प्राथमिकता देने की जरूरत है-

सबसे पहले तो कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। देश के श्रमिक वर्ग द्वारा धन सृजन की क्षमता बढ़ाने के लिए भारत को अधिक से अधिक महिलाओं को कार्यबल में शामिल करना होगा। विश्व बैंक की 2018 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2018 में भारत में कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी 27 फीसदी थी, जबकि वैश्विक औसत 48.5 का है। आईएमएफ रिसर्च के मुताबिक, कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के स्तर तक बढ़ाने से भारत की जीडीपी 27 फीसदी बढ़ सकती है और वे हर वर्ष भारत की जीडीपी वृद्धि में योगदान कर सकती हैं। ऐसे ही, बदलती जनसांख्यिकी को देखते हुए सामाजिक सुरक्षा बढ़ाने की जरूरत है। पेंशन योजनाओं में निवेश को प्रोत्साहन देना भारत के लिए सर्वोपरि है। हर दस भारतीय श्रमिक में से आठ अनियोजित क्षेत्र में काम करते हैं, जिनकी सेवानिवृत्ति बचत खातों तक सीमित पहुंच है। इसके अलावा, एक बढ़ता हुआ मध्यवर्ग बढ़ती मजदूरी दर और जीवन की गुणवत्ता में सुधार देख रहा है, जिसके परिणामस्वरूप सेवानिवृत्ति आय में वृद्धि की उम्मीद होगी। यह गतिशीलता का वही परिणाम होगा, जिसकी भविष्यवाणी विश्व आर्थिक मंच ने की थी कि सभी बड़ी आबादी वाले देशों में सेवानिवृत्ति बचत अंतराल में उच्चतम वृद्धि (10 फीसदी संयुक्त वार्षिक विकास दर-सीएजीआर) होगी।

भविष्य की शिक्षा की तैयारी भी जरूरी है। आज का रोजगार बाजार काफी हद तक एक दशक पहले से अलग है। इसके अलावा, आज प्राइमरी स्कूल में दाखिला लेने वाले 65 फीसदी बच्चे अंततः एक ऐसी नौकरी में काम करेंगे, जो अभी नहीं है। इस कौशल-अंतराल को पूरा करने के लिए छात्रों के पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण सुधार की आवश्यकता होती है। इसके अलावा आबादी के एक बड़े हिस्से को फिर से हुनरमंद बनाने की जरूरत है, जो पैतृक काम-धंधों में फंसे हैं। सरकार को औद्योगिक कार्यबल को फिर से प्रशिक्षित करने की जरूरत है, जहां भारत की जनसांख्यिकी में बदलाव के कारण नौकरी की आवश्यकताओं में भारी बदलाव की उम्मीद है।

प्रौद्योगिकी सक्षम स्वास्थ्य सेवा लागू करना भी सही कदम होगा। देश में बुजुर्गों की बढ़ती आबादी की स्वास्थ्य देखभाल में प्रौद्योगिकी के उपयोग की आवश्यकता होगी। हमारे देश में 1,700 मरीजों पर एक डॉक्टर का अनुपात है। देश में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा प्रतिभाओं की कमी ऐसी समस्या नहीं है, जिसका शीघ्र समाधान हो जाएगा। भारत में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने, निदान और देखभाल की दक्षता बढ़ाने और स्वास्थ्य सेवा वितरण और बीमा की लागत को कम करने में प्रौद्योगिकी सहायक हो सकती है।

-लेखक आरिन कैपिटल पार्टनर्स के चेयरमैन हैं।

अंतर्ध्वनि

>> नोम चोम्स्की

नायकों की नहीं, अच्छे विचारों की खोज करनी चाहिए

मुझे लगता है कि जीवन के हर आयाम में सत्ता, अनुक्रमों और राज करने की कोशिश में लगे केंद्रों को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए और उनको चुनौती देनी चाहिए। जब तक उनके होने का कोई जायज हवाला न दिया जा सके, वे गैरकानूनी हैं और उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। मनुष्य की आजादी की उम्मीद इससे ही बढ़ेगी।

प्रोपेगैंडा आमतौर पर अभिजात हितों से बहुत नजदीक से जुड़े रहते हैं। इस तंत्र (जो प्रोपेगैंडा को फैलाने में मदद करता है) की खूबसूरती ही यही है कि वह असहमतियों और असुविधाजनक जानकारियों को नियंत्रण में और हाशिये पर रखता है। ताकि उनका होना यह तो तय कर ही दे कि तंत्र अखंड नहीं है, लेकिन ये असहमतियां इतनी बड़ी भी न हों कि अधिकारिक एजेंडे में कोई मानीखेज हस्तक्षेप कर सकें।

टेलीविजन पर बड़े कॉरपोरेट विज्ञापनदाता शायद ही कभी ऐसे कार्यक्रमों को प्रायोजित करते हैं, जो कॉरपोरेट गतिविधियों की गंभीर आलोचनाओं में संलग्न होते हैं, फिर चाहे वह पर्यावरण के स्तर में गिरावट की समस्या हो, चाहे सेना या औद्योगिक क्षेत्र के कामकाज के तरीके पर कोई बात कर रहा हो या कोई, तीसरी दुनिया में होने वाले तानाशाही रवैये के कॉरपोरेट समर्थन और उनके द्वारा उठाए जाने वाले लाभ पर बात करे। किसी भी प्रोपेगैंडा मॉडल में खुले बाजार की मान्यताओं में एक प्रारंभिक विश्वसनीयता होती है। शिक्षा थोपी हुई अज्ञानता का एक तंत्र है। यह बुद्धिजीवियों की जिम्मेदारी है कि वे सच बोलें और झूठ उजागर करें। हमें नायकों की खोज में नहीं रहना चाहिए। हमें अच्छे विचारों की खोज में रहना चाहिए।

-सुविख्यात भाषा-विज्ञानी, दार्शनिक

मंजिलें और भी हैं

>> प्रकाश सिंह रघुवंशी

बीजदान कर दे रहा देसी, उन्नत खेती को बढ़ावा

वह 1964-65 का दौर था, जब देश में गेहूं के बीजों की नई-नई किस्में आ रही थीं। मेरे पिताजी ने किसानों की मदद के लिए इन बीजों के प्रचार-प्रसार का जिम्मा उठाया। वह एक प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे और कृषि मेलों में जाकर किसानों को बीज बांटते और उन्हें अच्छी फसल उगाने के लिए प्रोत्साहित करते। प्राकृतिक रूप से बीज विकसित करने का हुनर मैंने अपने पिताजी से सीखा। मैं उत्तर प्रदेश में वाराणसी जिले के तड़िया गांव का रहने वाला हूं। एक दुर्घटना के चलते मुझे पेनिसिलिन के इंजेक्शन का रिएक्शन हो गया और लगभग छह महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा। इस रिएक्शन के चलते मेरी आंखों की रोशनी लगभग जा चुकी है। इस घटना से पहले मेरी शादी हो चुकी थी, जिसके बाद परिवार की भी जिम्मेदारी मेरे कंधे पर आ गई। लेकिन मैं खराब तबीयत और आंखों की रोशनी कम होने के चलते मात्र ढाई एकड़ जमीन की खेती पर ही निर्भर था। बावजूद इसके मैं कुछ ऐसा करना चाहता था, जिससे कि मेरे बच्चों को बेहतर भविष्य मिले और समाज को नई दिशा। पर कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। मेरे परिचित और रिश्तेदार भी मुझसे दूरी बनाकर रखते थे। जब कहीं कोई रास्ता नहीं मिला, तो बचपन से अपने पिता से सीखा हुआ पौधों को परखने का हुनर मेरे काम आया। एक बार मैं अपने खेतों में गेहूं की फसल देखते हुए टहल रहा था। तभी मैंने एक पौधा देखा, जो बाकी पौधों से अलग था। इस बारे में मैंने तुरंत अपने पिताजी को बताया। उन्होंने कहा कि इस पौधे के बीज की किस्म बाकी फसल से अलग होगी। मैंने उस पौधे की देख-रेख की। फसल तैयार होने के बाद काट ली गई, पर उस पौधे को तैयार होने में थोड़ा वक्त लगा। इस पूरे समय के दौरान मैंने हर रोज़ उस पौधे की देखभाल की, ताकि कोई जानवर उसे खराब न कर दे। जब वह बिल्कुल पक गया, तो मैंने पत्नी के साथ मिलकर इसके बीज निकाले। इन बीजों को हमने बहुत ही सहेजकर रखा। फिर गेहूं का अगला मौसम आने पर हमने उन बीजों को लगाया और उन थोड़े-से बीजों से ही हमें बहुत उपज मिली। इस बीच मैं कई कृषि वैज्ञानिकों से मिला और जानना चाहा कि आखिर कैसे एक किस्म की फसल में एक-दो अलग किस्म के पौधे उग आते हैं। वैज्ञानिकों ने बताया कि ऐसा नैचुरल क्रॉस पोलिनेशन से संभव है। वर्ष 2000 तक मैंने गेहूं, धान और कुछ दालों की कई तरह की किस्में इकट्ठा कर ली। इसके बाद इन सभी का डाटा रिकॉर्ड किया। मुझे जो कुछ भी मिला था, प्रकृति से मिला था। आंखों की रोशनी कम होने के बावजूद खेत में खड़ी फसल में भी मैं अलग किस्म के पौधे को पहचान लेता था। यह कुदरत का दिया हुनर नहीं था तो क्या था? मैं प्रकृति के इस उपहार को सबसे बांटना चाहता था, ताकि लोग देसी बीजों का इस्तेमाल करें। इसलिए मैंने बीजदान अभियान शुरू किया। इस अभियान के अंतर्गत बिना पैसे लिए उन्नत किस्म के स्वदेशी बीज किसानों को बांटे हैं। आज कोई भी मेरे गांव आकर स्वदेशी बीज बैंक से मुफ्त में बीज ले सकता है। इस अभियान के लिए मुझे नेशनल इनोवेशन अवार्ड दिया गया। कुछ समय पहले मुझे खेती के क्षेत्र में लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भी मिला। साथ ही इटली की चर्चित संस्था 'स्लोफूड' ने मुझे अपना स्थायी सदस्य भी बनाया। हमारे देश में आज भी अच्छे लोगों की कमी नहीं है। पूर्वजों से मिला हुआ परंपरागत ज्ञान हमारे भविष्य की कुंजी है। इसे आगे बढ़ाना होगा। यदि किसी भी किसान को देसी बीज उपजाने में परेशानी आती है, तो वह ट्रेनिंग के लिए मुझसे संपर्क कर सकता है।

पूर्वजों से मिला हुआ परंपरागत ज्ञान ही हमारे भविष्य की कुंजी है। हमें इसे आगे बढ़ाना होगा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

मोदी के विरोधी

नरेंद्र मोदी की दूसरी पारी में भी उनके विरोधी उतने ही सक्रिय हैं, जितना उनकी पहली पारी में थे। बल्कि विरोधियों ने तो शपथ ग्रहण से पहले ही गुरुग्राम और बेगूसराय में मुस्लिमों पर हमले के लिए मोदी को जिम्मेदार ठहरा दिया।

तवलीन सिंह

पिछले सप्ताह नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण के बाद नई सरकार का नया दौर शुरू हुआ है। लेकिन मोदी के पुराने विरोधियों ने अभी तक इस नए दौर को स्वीकारा नहीं है। मोदी से वे उतना ही वैर रखे हुए हैं, जितना उनके पिछले दौर में रखे हुए थे। सो शपथ ग्रहण से पहले ही मोदी पर हमले शुरू हो गए थे। वह प्रधानमंत्री बने भी नहीं थे कि उनके सिर पर चुनाव परिणाम आने के बाद मुसलमानों पर हुए हमलों की दो घटनाएं थोप दी गईं। इनमें से एक घटना गुरुग्राम की थी, जहां एक मुस्लिम लड़के की टोपी किसी हिंदू लड़के ने जबर्दस्ती उतार दी थी और उसको पाकिस्तान जाने के लिए कहा था। दूसरी घटना बेगुसराय की थी, जहां किसी ने एक व्यक्ति पर सिर्फ इसलिए गोली चलाई, क्योंकि वह मुसलमान था।

इन घटनाओं के बाद मोदी के विरोधियों ने ऊंची आवाजों में कहना शुरू कर दिया कि मोदी के दोबारा प्रधानमंत्री बनने के कारण देश में फिर से नफरत फैलने लग गई है।

दिल्ली में मोदी के विरोधियों की एक बड़ी टोली है। इस टोली में बुद्धिजीवी हैं, जाने-माने लेखक और पत्रकार हैं, वामपंथी हैं और कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो कभी भाजपा में थे, लेकिन मोदी से वैर रखते हैं, क्योंकि मोदी ने उनको वह अहमियत नहीं दी है, जिसे वह अपना अधिकार समझते हैं।

इस टोली के कुछ सदस्य पिछले कुछ महीनों से राहुल गांधी के सलाहकार बने रहे। उनको पूरा विश्वास था कि इस बार मोदी सरकार नहीं बनेगी। उनका मानना था कि मोदी इस बार 180 सीटों से ज़्यादा नहीं ला पाएंगे, सो क्षेत्रीय दलों को समर्थन देकर दिल्ली में ऐसी सरकार बनेगी, जो कांग्रेस के समर्थन पर निर्भर रहेगी। इनको पूरा विश्वास था कि राहुल गांधी का 'टाइम' आने वाला है।

जब ऐसा नहीं हुआ, तो ये लोग खुलकर मोदी से वैर जताने में लग गए हैं। इनमें से कुछ टीवी चर्चाओं में भाग लेने, कुछ अखबारों में लेख लिखने और कुछ दिल्ली में अफवाहें फैलाने का काम कर रहे हैं। इन अफवाहों को सोशल मीडिया द्वारा फैलाया जा रहा है और इनका मुख्य संदेश यही है कि अब देश में लोकतंत्र का अंतिम काल शुरू हो गया है। यही बात ये लोग मोदी के पहले कार्यकाल में भी कहते आए थे, लेकिन अब अपनी डूबती नाव को देखकर और भी ज्यादा जोश से कहने लग गए हैं। इनकी बातों का असर इतना है कि अमर्त्य सेन जैसे विदेशों में रहने वाले भारतीय भी लिखने लग गए हैं कि भारत में अब लोकतंत्र के बचने की संभावनाएं कम हैं। यानी जो कहानी मोदी के पहले दौर में हमको सुनने को मिली थी, वह फिर से शुरू हो गई है।

पिछली बार यह कहानी तब शुरू हुई थी, जब दिल्ली में कुछ गिरजाघरों पर हमले हुए थे। तब तक मोदी पर इसका दोष लगाया गया, जब तक यह जानकारी नहीं मिली कि इन हमलों के पीछे चोर थे, संघ परिवार के समर्थक नहीं। इस कहानी को नया मोड़ तब दिया गया, जब मुसलमानों और दलितों पर गोरक्षकों ने हमले करने शुरू किए।

हर लिंचिंग का दोष मोदी के सिर थोपा गया और कुछ हद तक दुनिया की नजरों में मोदी की छवि कलंकित हुई भी, क्योंकि मोदी ने मौन रहने का निर्णय लिया। इस बार चुनाव जीतने के बाद मोदी ने अपने पहले भाषण में स्पष्ट शब्दों में कहा कि उनका पूरा इरादा है 'सबका विश्वास' जीतने का है, लेकिन उनके विरोधी अभी से उन पर हमले करने के लिए तैयार बैठे हुए हैं। नया दौर बेशक आया है, लेकिन इस नए दौर में भी मोदी के पुराने विरोधी वही हैं, जो उनके पिछले दौर में थे।

खुली खिड़की

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पेटेंट

तकनीकी विकास के साथ विश्व के कई देशों में विभिन्न क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) का उपयोग तेजी से बढ़ा है। परिणामस्वरूप तकनीकी क्षेत्र की कई कंपनियों ने इसे बनाया और इसका पेटेंट कराया है।

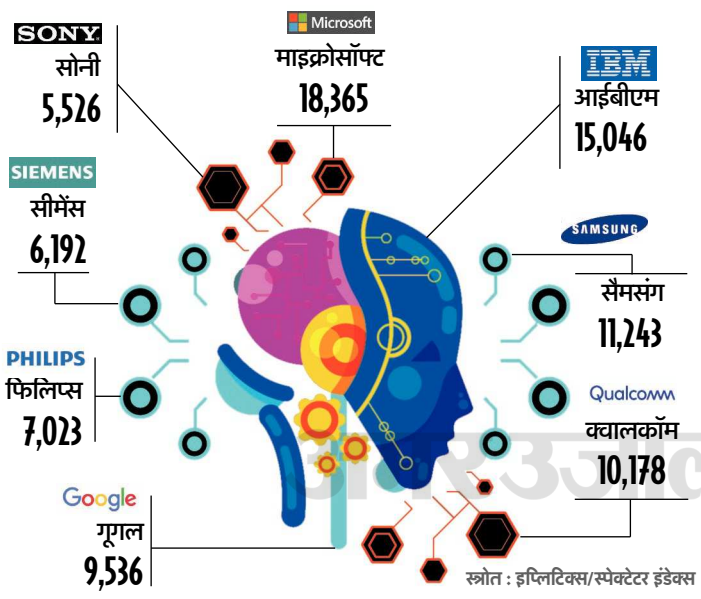

स्रोत : इप्लिटिक्स/स्पेक्टेटर इंडेक्स

सत्संग

ईमानदारी सच्ची पूजा

ऋषिकेश के गीता भवन में एक माह व्यापी सत्संग चल रहा था। असंख्य श्रद्धालु इस आयोजन में शामिल हो संत-महात्माओं के प्रवचनों से लाभान्वित हो रहे थे। उस बार सत्संग में परम विरक्त संत स्वामी रामसुखदास तथा आध्यात्मिक विभूति हनुमान प्रसाद पोद्दार के प्रवचनों का आयोजन था। एक दिन कुछ व्यापारी हनुमान प्रसाद पोद्दार की कुटिया में पहुंचे। उन्होंने उनसे विनम्रतापूर्वक कहा, हाल ही में हमने नया-नया व्यापार शुरू किया है। अत्यधिक व्यस्तता के कारण पूजा, उपासना के लिए समय नहीं मिल पाता। इससे यह संशय बना रहता है कि हमारा जीवन सार्थक कैसे होगा। हनुमान प्रसाद जी ने कहा, प्रत्येक कार्य या अपने दायित्व को ईमानदारी से पूरा करोगे, तो समझ लो कि भगवान की आराधना स्वतः हो रही है। यदि व्यापार करने वाला अधिक लाभ कमाने की आकांक्षा छोड़ ईमानदारी से सीमित लाभ अर्जित करने लगे, तो वह अपने व्यापारी धर्म का ही पालन कर रहा है। जो व्यक्ति ज्यादा लाभ कमाने के लोभ में खाद्य पदार्थों में मिलावट करते हैं, नकली वस्तुएं बेचते हैं, वे घोर अधर्म कर अपना मानव जीवन निरर्थक कर रहे हैं। कर्म के प्रवाह को और अपने मन को भगवान की ओर मोड़ लो, पूरी निष्ठा से कर्म करो, सवेरे-शाम भगवान का पावन स्मरण करो और समझो कि पूजा-उपासना हो गई। व्यापारियों की जिज्ञासा का समाधान हो गया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

गुंजन, पिता और विफलता

एक पिता की कहानी, जिसने बेटी को जीवन की बहुमूल्य शिक्षा दी।

गुंजन पांचवीं क्लास में थी। दो दिन से वह कुछ खा-पी नहीं रही थी। उसने सपना देखा था कि वह क्लास में फेल हो गई है और बच्चे उसका मजाक उड़ा रहे हैं। मां ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, पर नहीं मना पाई। फिर उन्होंने गुंजन के पापा से सारी बात बताई। वह गुंजन से बोले, बेटा, पास या फेल होना हमारे दिमाग की एक धारणा भर है। इससे हमारे हुनर, हमारी अच्छाई या बुराई पर कोई फर्क नहीं पड़ता। तो तुम्हें भला किस बात का डर है? गुंजन सिसकते हुए बोली, पर पापा, फेल होने पर लोग मजाक उड़ाते हैं। उसके पापा कहने लगे, बेटा, जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तो मुझे अंग्रेजी की स्पेलिंग कभी याद नहीं हो पाती थी। साथी ही नहीं, टीचर भी मुझ पर हंसते थे। पर मैंने उसे विफलता की तरह लिया ही नहीं। मैं समझ रहा था कि जो मैंने किया, वह गलत है।

एक बार मेरे स्कूल में एक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता हुई। उसमें केवल यही बताना था कि कौन-सी स्पेलिंग गलत है। मैं तो गलत स्पेलिंग का महारथी था। मुझे प्रथम पुरस्कार मिला। शिक्षकों ने मेरी तारीफ की। जब मैं बड़ा हुआ, तो किसी खेल में रुचि नहीं दिखा पाया। क्लास में मैं इकलौता ऐसा लड़का था, जो हर खेल में पीछे रह जाता था। पर उसके अलग फायदे थे। मैं हर खेल की गलतियों को अच्छी तरह समझ पाता था, क्योंकि मुझे यह पता ही था कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इसी खासियत के कारण आज मैं क्रिकेट के अंतरराष्ट्रीय मैचों की अंपायरिंग करता हूं। बेटी, एक बात बहुत अच्छी तरह से समझ लो कि गलती करना गलत कभी नहीं होता। लेकिन गलती करके भी न समझना सबसे बड़ी गलती है। तुम यह मत सोचो कि तुम परीक्षा में विफल हो जाओगी। यह सोचो कि अब तुम्हारे पास विफल न होने की एक और वजह है।

जीवन की हर विफलता सफलता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है।